B-2

L-7

दिनांक
01-10-23

लॉर्ड डलहौजी

प्रश्न- क्या लॉर्ड डलहौजी को आधुनिक भारत का निर्माता कहा जा सकता है?

- लॉर्ड डलहौजी ने भारत के मानचित्र को इतना तेजी से परिवर्तित किया, जो युद्ध के द्वारा संभव नहीं था।
- लॉर्ड डलहौजी से पूर्व के शासकों की नीति यथासंभव युद्ध या विलय को टालने की थी वहीं डलहौजी इससे किसी भी अवसर को गवाना नहीं चाहता था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
© KHANSIR

लार्ड डलहौजी का कार्यकाल (1848-56) साम्राज्य विस्तार विकास व संगठन/सुधार के लिए जाना जाता है।

डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार को निम्नलिखित तरीके से अंजाम दिया-

[a] युद्ध के द्वारा - डलहौजी जब भारत आया तो उसने अनुकूल परिस्थितियां देखते हुए मुख्यतः पंजाब सिक्किम व लोअर बर्मा को युद्ध के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

[b] विलय नीति - डलहौजी के साम्राज्य विस्तार का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण व्यपगत का सिद्धान्त बना, जिसमें भारतीय शासकों द्वारा गोद लिये हुये पुत्र को उत्तराधिकारी घोषित करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया और इसी नीति

के अन्तर्गत सतारा, जैतपुर, उदयपुर, बघाट तथा झांसी व नागपुर जैसी रियासतों के विलय की घोषणा की गयी

हड़प नीति, डलहौजी द्वारा किसी भी तरह ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार को पूरा करना चाहती थी जिसका प्रबल उदाहरण करौली का विलय था जिसे अनुचित मानते हुये बाद में विलय से अलग कर दिया गया।

[C] डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार के लिये केवल सिद्धान्तों का सहारा ही नही लिया बल्कि कुशासन का आरोप लगाकर भी साम्राज्य विस्तार के लक्ष्य को पूरा किया।

स्पष्ट है कि भारत का मानचित्र जितना तेजी से डलहौजी ने बदला उतना किसी अन्य शासक ने नही। वस्तुतः डलहौजी के पहले के शासकों ने यदि साम्राज्य विस्तार किया भी तो कभी-कभी युद्धों के द्वारा ना कि डलहौजी की तरह निरंतर युद्ध व विलय की योजना की तरह।

विशेष

वस्तुतः 1813-57 के दौर में, नेपोलियन के पतन के बाद समूर्ण विश्व में ब्रिटिश शक्ति का परचम लहराने लगा था और भारत में भी मराठों की शिकस्त के बाद कोई शक्तिशाली विपक्ष नही था अतः उनकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा में वृद्धि होना स्वभाविक ही था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Motivated Learning Platform

इसके साथ ही आर्थिक दृष्टिकोण से भी साम्राज्य विस्तार अपेक्षित था क्योंकि ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति की सफलता भारत से कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति तथा ब्रिटेन में निर्मित सामग्री की बिक्री हेतु एक वृहद बाजार की थी अतः स्पष्ट है कि विलय और विस्तार की नीति को अपनाना ब्रिटिश आवश्यकता के अनुसार ही था और इसी लिये डलहौजी ने स्पष्ट कहा कि हमारी नीति देसी रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने की है।

डलहौजी के समय विकास कार्य -

डलहौजी के कार्यकाल में आधुनिक अवसंरचना का विकास करते हुये भारत में पहली बार रेल चलाई गयी और इसके साथ ही पोस्टल सेवा व टेलीग्राम व्यवस्था के द्वारा यातायात व संचार को बढ़ावा दिया गया।

कृषि विकास के लिए सिंचाई हेतु नहरों की भी व्यवस्था की गयी तथा पुल सड़कों व बन्दरगाहों के निर्माण से भारत में आधुनिक अवसंरचनाओं की स्थापना की जाने लगी।

संगठन / सुधार के कार्य

डलहौजी के कार्यकाल में विभिन्न संगठनों की स्थापना की गयी जिससे कि कार्य प्रणाली को निश्चित व व्यवस्थित रूप दिया जा सके जैसे कि लोक निर्माण विभाग की स्थापना।

- इसके कार्यकाल में सामाजिक व शैक्षिणिक सुधार भी महत्व रखते हैं। 1854 के वुड डिस्पेच को तो भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा तक कहा गया, कन्या भ्रूण हत्या को रोकना तथा विधवा पुनर्विवाह अधिनियम जैसे प्रगतिशील कानून भी बनाये गये और इसके साथ ही भारत में तकनीकी तथा वोकेशनल शिक्षण संस्थाओं की स्थापना भी डलहौजी के कार्यकाल में हुई।

डलहौजी के विकास व सुधार कार्यों को देखते हुये ही कुछ विद्वान उसे आधुनिक भारत का निर्माता भी कहते हैं।

यद्यपि डलहौजी के उपरोक्त कार्य महत्वपूर्ण साबित हुए और आधुनिक अवसंरचना की प्रेरणा भी बने किन्तु वास्तविक अर्थों में डलहौजी को आधुनिक भारत का निर्मात नहीं माना जा सकता क्योंकि उसकी सोच औपनिवेशिक स्वार्थों की पूर्ति से संचालित थी अर्थात उसने ब्रिटिश हितों को प्राथमिकता दी ना कि भारत के आधुनिकीकरण को। वस्तुत: आधुनिक मूल्यों की प्रेरणा राजा राम मोहन राय जैसे सुधारकों से मिली इसीलिए उन्हें आधुनिक भारत का पिता कहना अधिक तार्किक है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

संयोग सिद्धांत

⇓

अर्थ

⇓

अंग्रेजों ने भारत को बेखबरी (भारत की) के दौर में जीत लिया।

पक्ष	विपक्ष
→ ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) विभिन्न व्यापारिक कंपनियों में से एक थी	- औरंगजेब की मृत्यु से पहले मुगल इतने प्रभावी थे कि अंग्रेज चाहकर भी साम्राज्य स्थापना नहीं कर सकते थे
- 1784 के पिट्स इंडिया एक्ट में स्पष्टत: युद्ध न करने का आदेश दिया गया था।	किन्तु 1717 के फरमान के बाद उनकी राजनीतिक इच्छा स्पष्ट उभरने लगती है और 1776 में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के आरंभ के बाद उनकी नीतियों में योजनाबद्धता दिखायी देने लगती है।
- भारतीय शासकों व व्यापारियों ने रियायतें देकर अंग्रेजों की महत्वाकांक्षा को बढ़ाया।	- देशी रियासतों के साथ घेरे की नीति से सहायक संधि और फिर डलहौजी की विलय नीति में स्पष्ट तार्किक विकास दिखता है।
	- अंग्रेजों ने उपयोगितावादी दर्शन से प्रेरित होकर भारत के आधुनिकीकरण का श्रेय लेना चाहा और भारत में साम्राज्य स्थापना को उचित सिद्ध करने का

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

ध्यान लिया जो स्पष्ट करता है कि उनकी भारत विजय केवल संयोग से नहीं बल्कि सोच विचार और रणनीतिबद्ध तरीके से की गयी।

⇒ आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास

⇒ महत्वपूर्ण बिन्दु:-

- परम्परागत रूप से भारत एक आत्मनिर्भर देश माना जाता रहा था और उसकी आत्मनिर्भरता का सबसे मजबूत आधार गांवों का आर्थिक रूप से सक्षम होना था जहां जीवन यापन आपसी सहचर्यता के आधार पर किया जाता था और भारत की आर्थिक स्थिति इस तथ्य से स्पष्ट हो जाती है कि इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था।
- भारत में कृषि के साथ-साथ उद्योग विशेषत: हथकरघा उद्योग की पहचान वैश्विक स्तर पर थी और R.C. दत्त ने अपनी पुस्तक "भारत का आर्थिक इतिहास" में यहां तक लिखा कि भारत का प्रत्येक घर एक औद्योगिक इकाई था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- शाहजहां के शासनकाल में आये फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने भारत की सम्पन्नता को देखते हुये कहा था कि विश्व का सारा सोना चांदी (बुलियन) घूमकर अन्ततः भारत में खत्म हो जाता है और एक आंकड़े के अनुसार औपनिवेशिक शासन की स्थापना से पहले विश्व व्यापार में भारत की भागीदारी लगभग 25% थी।

उपनिवेशवाद के चरण

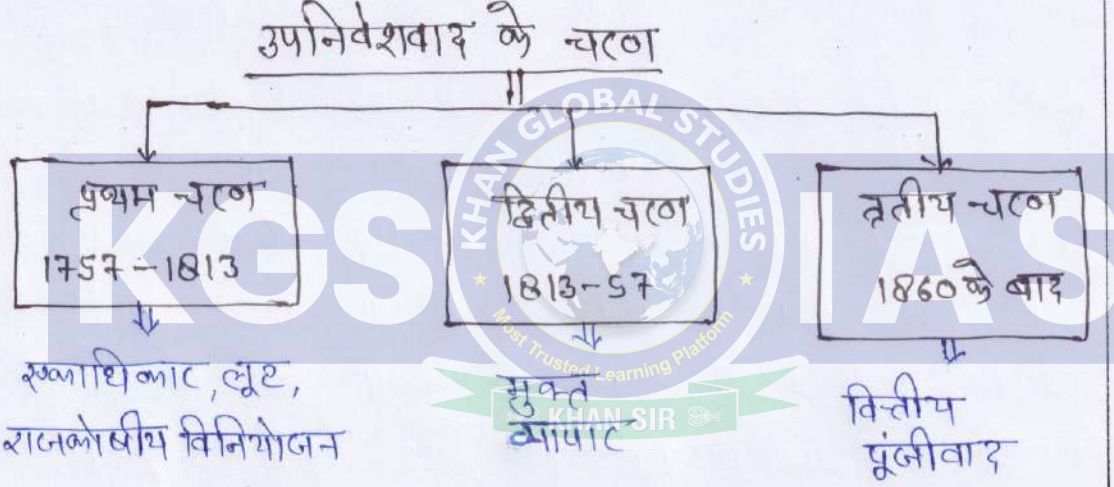

- **प्रथम चरण** (1757 – 1813) → एकाधिकार, लूट, राजकोषीय विनियोजन
- **द्वितीय चरण** (1813 – 57) → मुक्त व्यापार
- **तृतीय चरण** (1860 के बाद) → वित्तीय पूंजीवाद

⇒ 17 वीं सदी में एक व्यापारिक इकाई के रूप में EIC का प्रवेश भारत में हुआ और भारतीय संसाधनों की क्षमता और यहां की अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुये अंग्रेज भारत पर एकाधिकार की इच्छा करने लगे और प्लासी के युद्ध विजय के बाद अंग्रेजों ने बड़ी चालाकी से भारत व अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये उपरोक्त तीन चरणों में भारत को अपना पूर्ण उपनिवेश बना लिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- प्रथम चरण (1757-1813) -

- यह एकाधिकार, बल पूर्वक लूट व राजकोषीय विनियोजन का दौर कहलाया। इस चरण में युद्धों, समझौतों व संधियों के द्वारा भारतीय संसाधनों की लूट की गयी तथा बंगाल की विजय के बाद यहां की पूंजी को ब्रिटेन भेजा जाने लगा तथा बंगाल के राजकोषीय अधिशेष को भी ब्रिटेन भेजे जाने से क्रमशः बंगाल विपन्न/गरीब होने लगा।

1765-72 तक बंगाल में द्वैध शासन लागू कर वहां के संसाधनों की निर्लज्ज लूट की गयी और एक आंकड़े के अनुसार 1772 तक 80 मिलियन पाउंड की निकासी की गयी।

. अंग्रेजों ने इस दौर में कोई महत्वपूर्ण सामाजिक व प्रशासनिक सुधार नहीं किये यद्यपि बनारस में संस्कृत विद्यालय (जोनाथन डंकन द्वारा) और कलकत्ता में एक मदरसा अवश्य स्थापित किया गया तथा 1784 में विलियम जोन्स के नेतृत्व में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की गयी जो प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अनुवाद और पुरातात्विक खोजों हेतु समर्पित था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform